आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received: 20/11/2022; Accepted: 25/11/2022; Reviewed: 18/12/2022; Published: 24/12/2022

प्रेमचंद के बाल कहानियों की विश्व-दृष्टि

- श्रीमती. शांति गोहाँइ
हिन्दी विभाग
एम. फिल शोधार्थी
असम विश्वविद्यालय, दीफू परिसर- 782462
फोन नंबर- 7002422537
ई-मेल- santigohain@gmail.com

श्रीमती. शांति गोहाँइ , प्रेमचंद के बाल कहानियों की विश्व-दृष्टि ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022, (270-278)

इस आलेख को आरम्भ करने से पहले यह स्पष्ट करना उचित रहेगा कि विश्व-दृष्टि का अर्थ क्या है और उसकी परिभाषा क्या है। विश्व-दृष्टि का अर्थ है - दुनिया को देखने का नजरिया या दृष्टि। यह संसार को भौतिक रीति से देखना ही नहीं, बल्कि दार्शनिक रीति से देखना भी है, यह उन सब बातों के प्रति दृष्टिकोण है जो अस्तित्व में हैं और जो हमसे सम्बन्ध रखती हैं।

एक व्यक्ति की विश्व-दृष्टि, उस ब्रह्माण्ड के बारे में होती है, जिसमें वह निवास करता है, उसकी सबसे आधारभूत मान्यताओं और धारणाओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रकट करता है कि वह मानव, अस्तित्व के आधारभूत प्रश्नों का उत्तर कैसे देगा।

ऐसे आधारभूत प्रश्न जिसका सम्बन्ध इस बात से है कि हम कौन और क्या हैं, हम कहां से आए हैं, हम यहां क्यों हैं और हम कहां जा रहे हैं। विश्व-दृष्टि हमारे चारों ओर के संसार के अनुभवों को आकार देती है। विश्व-दृष्टि की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, कला और साहित्य में होती हैं। यह रचना के स्तर पर धारणा और कल्पना से होती है। किसी रचनाकार की विश्वदृष्टि की तलाश के दौरान हम यह देखते हैं कि उसके सपनों का संसार कैसा है, वह किन मूलभूत मूल्यों के पक्ष में खड़ा है और उसकी रचना में वह किस प्रकार प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अभिव्यक्त हुआ है।

इस आलेख में हम प्रेमचंद के बाल कहानियों की विश्व-दृष्टि को समझने की कोशिश करेंगे। बच्चों के लिए प्रेमचंद द्वारा लिखे गए कहानियों से गुजरते हुए हम पाते हैं कि वे सामाजिक समानता और समरसता को बहुत महत्व देते हैं। उनकी कहानियों में बार-बार यह आता है कि मानव जीवन के रोजमर्रा के कार्यकलापों में सच्चाई और ईमादारी की बहुत बड़ा मूल्य है। साथ ही उनका साहित्य यह संदेश भी देता है कि सद्-व्यवहार की हमेशा जीत होती है। इसके अतिरिक्त, वे सिर्फ मनुष्यों के प्रति ही नहीं, बल्कि जीव जंतुओं समेत पूरी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं।

इस प्रकार, उनके बाल कहानियों से गुजरते हुए हम उनकी विश्व दृष्टि के मुख्य बिंदुओं के रूप में सामाजिक समानता, सामाजिक समरसता, सच्चाई, ईमानदारी, सद्-व्यवहार तथा संपूर्ण प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को चिह्नित कर सकते हैं।

सामाजिक समानता और समरसता

समाज में जाति, वर्ग, भाषा और धर्म के बीच भेद-भाव न रखकर उसे समान भाव से देखना ही सामाजिक समानता है, स्त्रियों को बराबर के अधिकार देना ही सामाजिक समानता कहलाता है। सामाजिक समानता किसी समाज की वह अवस्था है जिसके अन्तर्गत उस समाज के सभी व्यक्तियों को सामाजिक आधार पर समान महत्व प्राप्त होता है। समरसता का अर्थ है - सभी को अपने जैसा समान समझना। हम सभी एक ही ईश्वर के संतान है और हम में एक ही चेतना विद्यमान है, इस बात को ह्रदय से स्वीकार करना ही समरसता का मूल अर्थ है। जातिगत भेद-भाव एवं अस्पृश्यता को दूर कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गों एवं वर्णों के मध्य एकता लाना ही सामाजिक समरसता है। जाति दोष का भेद ही समाज में समरसता का अभाव उत्पन्न करता है। जिस देश में सामाजिक समरसता होती है, वह देश तेजी से विकास की ओर गति करता है।

सामाजिक एकता एवं समरसता से समाज के लोगों में एकजुटता आती हैं और सभी जाति-धर्म के लोग मिलकर एक साथ रहते हैं। सामाजिक समरसता होने से समाज के लोगों में एक दूसरे के प्रति सद्भावना रहती है।

प्रेमचंद का साहित्य, सामाजिक-सांस्कृतिक दस्तावेज है। उनके कहानियों में उस दौर के समाज सुधार आन्दोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आन्दोलनों के सामाजिक प्रभावों का चित्रण है। उनमें दहेज़, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छुआछूत, जाति-भेद, विधवा-विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष असमानता आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, उनके साहित्य की मुख्य विशेषता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक कुरीतियों का डटकर विरोध किया है।

प्रेमचंद ने अपने कथा-साहित्य में ऐसे अनेक विषयों को प्रस्तुत किया है जिनका सम्बन्ध आम जनता से दिखता है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में सामाजिकता पर विशेष जोर दिया था। उनके अनुसार समाज में आर्थिक समानता होनी चाहिए। उन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी त्याग, तप और संयम के साथ बिताया था। उन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था की घोर निन्दा करते हुए अपनी कृतियों द्वारा वर्ण-व्यवस्था की कड़ी निन्दा किया था तथा सामाजिक दायित्वों को सफलतापूर्वक निभाया था।

प्रेमचंद एक महान दार्शनिक भी थे। उन्होंने अपने समय के सभी धर्मों को अपनी निगाह से परखा था। उनका मानना था कि वही धर्म सर्वमान्य है जिसमें मानवता की बात कही गई हो। उन्होंने सभी धर्मों को समझकर एक ऐसे धर्म को अपना आदर्श बनाया था जो लोक सेवा, सहिष्णुता, समाज के लिए व्यक्ति का बलिदान, शरीर और मन की पवित्रता आदि गुणों का समाहार हुआ हो। प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज में व्याप्त बाल-विवाह कुप्रथा को सामाजिक विष कहा है। इसकी निन्दा के लिए कई कहानियों की रचना की है। 'सुभागी' बाल कहानी में बाल-विवाह के दुष्परिणामों को दर्शाया है। प्रेमचंद के अनुसार विधवा विवाह से समाज से सामाजिक बुराईयों को मिटाया जा सकता है। नारी शिक्षा की दिशा में प्रेमचंद की अवधारणा यह थी कि स्त्रियों को शिक्षित किया जाए और उनको वह सभी अधिकार दिया जायें जो पुरुषों को प्राप्त हैं। अधिकार दिए जाने के साथ-साथ उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें ऐसी कोई पाश्चात्य पद्धति में न जाने दिया जाए जिससे वह विलासी हो और अपने कतर्व्य से विमुख हो। प्रेमचंद की विभिन्न सामाजिक कहानी में पुरुष-नारी समानता को महत्व दिया है।

छुआछूत, धार्मिक सहिष्णुता, साम्प्रदायिकता आदि विषयों में प्रेमचंद सचेत थे। उन्होंने अपने कहानी में एक ऐतिहासिक घटना को माध्यम बनाया कि जब १९२०-२२ ई० में हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित हुई तो चारों तरफ लोग खुश हो गए। लेकिन यह खुशी ज्यादा दिनों तक न रह सकी क्योंकि इसको भंग करने की साजिश ब्रिटिश शासकों के द्वारा होने लगी। हिंसा परोधर्म: के माध्यम से धर्म के नाम पर सारे देश में फैली ऐसी अराजकता को प्रस्तुत किया है।

मुंशी प्रेमचंद जनजीवन और मानव प्रकृति के पारखी थे। उनकी रचनाओं में इंसान को एक नई समझ और सीख मिलती है। सामाजिक समानता का आदर्श उनकी कहानियोंमें स्पष्ट रूप से दिखाई देते है। प्रेमचंद ने व्यक्तिवादी परंपरा से ऊपर उठकर सामाजिक परंपरा, सामाजिक मुद्दों, सामजिक वास्तविकता से संबंधित रचनाओं का साहित्य में आगाज किया है और उस पर खुलकर टिप्पणियां भी की है। मुंशी प्रेमचंद सामाजिक संवेदना के संवाहक माने जाते हैं। वे न केवल सामाजिक संदर्भ में बल्कि परिवेश में यथार्थवादी चित्रण और समस्याओं के विश्लेषण में भी विश्वास करते थे।

एक लेखक के रूप में उनका उद्देश्य समाज को समान रूप से देखना भी है। प्रेमचंद की सामाजिक समानता उनकी उम्र के किसी भी अन्य लेखक की तुलना में अधिक सकारात्मक और प्रगतिशील है। उनके लेखन में सामाजिक परिप्रेक्ष्य का अनुसरण करनेवाले रचनाकार अधिक स्पष्ट रूप से और प्रभावी ढंग से व्यक्ति और समाज के कल्याण के बारे में कल्पना करते है। जीवन का यह दृष्टिकोण उनके लेखन में परिलक्षित होता है, जो

उनकी कला को अधिक अभिव्यंजक और सत्य बनाता है। प्रेमचंद के लेखन में सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को देखने का नजरिया मिलता है। वे तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों तथा अत्याचारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते थे। उनके सामाजिक उपन्यास लिखने का मुख्य प्रेरणा स्त्रोत सामाजिक जीवन के प्रति, समाज कल्याण के प्रति उनका उत्साह था। प्रेमचंद की बाल कहानियों में सामाजिक समानता को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। उनमें कई समकालीन सामाजिक बुराइयों जैसे नशा और अशिक्षा, भूमि, विवाद, जमींदारों के अत्याचारों, मंदिरों में अछूतों के प्रवेश पर प्रतिबंध आदि को अपने साहित्य के माध्यम से विरोध किया है और समाज को एक नयी दृष्टि प्रदान की है।

प्रकृति और परिवेश के प्रति संवेदनशीलता

प्रेमचंद के बाल कहानियों में प्रकृति और परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को स्पष्ट रूप से दिखती है। श्रेष्ठ बाल कहानी बालकों को केवल मनोरंजन ही नहीं करता अपितु वह उन्हें एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में विकसित होने का मौका भी देता है, गलत एवं सही को समझने की सीख भी देता है। अतः यह आवश्यक है कि बाल कहानी सैद्धान्तिक विचारधारा से हटकर बाल मनोविज्ञान पर आधारित हो।

हिन्दी बाल-साहित्य लेखन की ऐतिहासिक परंपरा पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि 'पंचतंत्र' की कथाएं बाल-साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके साथ 'हितोपदेश', 'अमर-कथाएं' एवं 'अकबर-बीरबल' के किस्से बच्चों के साहित्य में सम्मिलित है। विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की कहानियों के माध्यम से शरारती राजकुमारों को अल्प समय में संस्कारित करने के लिए पशु-पक्षियों को माध्यम बनाकर उन्हें शिक्षा दिया था।

अरस्तु ने भी माना है कि "बच्चों की शैतानियों को सीमित और नियंत्रित करने के लिए उन्हें रोचक कहानियां सुनानी चाहिए।" प्रेमचंद ने बाल मनोविज्ञान को केंद्र में रखकर ही बाल कहानियों की रचना की थी। उनके रचना ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के अंतर्गत पश्चिमी संस्कृति के विरोधी और स्वदेशी की भावना से प्रेरित है।

प्रेमचंद ने 1930 में 'हंस' के सम्पादकीय 'बच्चों को स्वाधीन बनाओं' शीर्षक के अंतर्गत लिखा था – "बालक को प्रधानत: ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वह जीवन में अपनी रक्षा अपने आप कर सकें। बालकों में इतना विवेक होना चाहिए कि वह हर एक काम के गुण-दोष को भीतर से देख सकें।" प्रेमचंद की कहानियां बच्चों को मानवीय संवेदनाओं के साथ-साथ सामाजिक आचार-विचार, न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित का संदेश देती है।

बच्चों के साहित्य में ज्यादा महत्वपूर्ण यह होता है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को जितना सहज व उतना आश्चर्यजनक बनाकर कैसे प्रस्तुत किया जाए। इसी सहजता व आश्चर्य के सहारे ही हम उन्हें समाज, राष्ट्र, विचारधारा से जुड़ सकते हैं।

प्रेमचंद द्वारा रचित आरंभिक कृति 'जंगल की कहानियां' संकलन में बच्चों के लिए 12 कहानियां हैं। जिसमें 'शेर और लड़का', 'पागल हाथी', 'मिट्ठू', 'पालतू भालू', 'मगर का शिकार', 'जुड़वाँ भाई', 'बनमानुस की दर्दनाक कहानी', 'दक्षिणी अफ्रीका में शेर का शिकार', 'गुब्बारे पर चीता', 'साँप का मणि', 'बनमानुस खानसामा', 'बाघ की खाल' आदि। इसके अलावा प्रेमचंद की कहानी 'सैलानी बंदर', 'रक्षा में हत्या', 'गुल्ली-डंडा', 'नादान-दोस्त', 'कश्मीरी सेब', 'ईदगाह', 'प्रेरणा', 'चोरी', 'बड़े घर की बेटी', 'कज़ाकी', 'बड़े भाई साहब', 'दो बैलों की कथा', 'परीक्षा', 'सच्चाई का उपहार', 'मंत्र' आदि कहानियों में प्रकृति और परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को चित्रित किया गया है। इस रचना संसार में गांव, कस्बा, शहर, जात-पात, हर वर्ग व मानसिक स्तर के पात्र हैं, जो किसी न किसी रूप में प्रभावित करती हैं।

लेखक की यह सभी कहानियां हमारे आस-पास के बाह्य जगत के साथ हमारे अंतर्जगत की भी सैर कराती हैं। इनमें पशु-पक्षी, स्थावर-जंगम भी मनुष्य रूप में व्यवहार और बातें करते हैं और अपना निर्णय व्यक्त करते हैं। चाहे वह 'मिट्ठू' कहानी का बन्दर हो या 'पागल हाथी' का मोती हाथी अथवा 'दो बैलों की कथा' के हीरा-मोती जैसे यादगार चरित्र।

'कुत्ते की कहानी' आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया एक अनूठा बाल उपन्यास है, जिसे प्रेमचंद ने अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले ही लिखा था। मानव समाज की विसंगतियों पर सटीक व्यंग करता यह बाल उपन्यास केवल मनोरंजक कथा ही नहीं है बल्कि बच्चों के ह्रदय में जीव-जंतुओं के प्रति करुणा, सम्मान का भाव जागृत करना भी इसका उद्देश्य है। जीव-जंतुओं का यह जगत, लेखक के ग्रामीण परिवेश का ही अटूट हिस्सा है। यह सच है कि पशु-पक्षियों का संसार बच्चों का प्रिय संसार है इसलिए ऐसे पात्रों से बच्चे ज्यादा लगाव महसूस करते हैं। इस उपन्यास का नायक 'कल्लू' कुत्ता बच्चों में सहृदयता और संवेदनशीलता का बीजवपन करने में पूरी तरह समर्थ हैं। यहां लेखक समाज की विद्रूपताओं और भ्रष्ट व्यवस्था की पोल भी खोलता है।

सजीवता, गतिशीलता व नाटकीय तत्वों से भरपूर इन कहानियों के संवाद, चरित्रों की पूरी छाप छोड़ने में सक्षम हैं। आज के समय में प्रेमचंद के बाल कहानियों की आवश्यकता बढ़ गई है, जो आज के सन्दर्भ में एक बार फिर बच्चों को दिशा बोध देकर अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा दे सकता है और सकारात्मक मूल्यों का विकास कर सकता है। साहित्यकार स्वभावत: प्रगतिशील होता है और कला को उपयोगिता की तुला पर तोलते हैं। साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफ़िल सजाना और मनोरंजन का साधन जुटाना नहीं हैं। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलनेवाली सच्चाई भी नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।

सच्चाई और ईमानदारी

मानव-ह्रदय आदि से ही सु और कु का रंगस्थल रहा है। प्राचीन साहित्य, धर्म और ईश्वर-द्रोहियों के प्रति घृणा और उनके अनुयायियों के प्रति श्रद्धा और भक्ति के भावों की सृष्टि करता रहा है। नवीन साहित्य, समाज का खून चूसने वालों, रंगे सियारों,हथकंडेबाजों और जनता के अज्ञान से अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवालों के विरुद्ध उतने ही जोर से आवाज उठा रहा है और दीनों, दलितों को अन्याय के हाथों सताए हुए के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहा है।

प्रेमचंद इस अर्थ में महान कहानीकार हैं कि लगातार एक के बाद दूसरी पीढ़ी उनकी कहानियों से सहज संवाद करती आ रही है। उनके समय और उनके चरित्रों को जानना जैसे हमारे समाज की एक स्वाभाविक जरुरत बन चुकी है। इन कहानियों में ईमानदारी और सच्चाई को प्रेमचंद ने मानवीय प्रेरणा के ऐसे आशा-भरे सामाजिक स्रोतों के रूप में पहचाना है, जो कभी नहीं सूख सकते।

मानव जीवन में ईमानदारी और सच्चाई के गुणों का होना आवश्यक हैं। अक्सर देखा गया है, जो इन्सान सच्चाई की राह पर चलता हैं वह ईमानदार भी होता हैं तथा अपने कर्तव्यों के लिए भी उतना ही जागरुक होता है, जितना कि वह अपने अधिकारों को लेकर होता है। हम समाज के बीच रहते हैं, हमारा नित्य कई लोगों से सम्पर्क होता रहता हैं। यदि हम दूसरों के साथ परस्पर अच्छा व्यवहार करेगें तो निश्चय ही वे भी हमारे प्रति आशावान बनेंगे।

सच्चाई और ईमानदारी की राह पर चलने वाले व्यक्ति का समाज में हर कोई सम्मान करता है तथा वक्त पड़ने पर लोग उसके साथ खड़े नजर आते है। ईश्वर सभी के कर्मों पर नजर रखता हैं वह मनुष्य को वैसा ही फल देता हैं, जैसे उसके कर्म हैं। यदि हम अपने परिवेश के लोगों को गहराई से समझते हैं तो पाएंगे कि सच्चाई की राह पर चलने वाला व्यक्ति आज भले ही मुश्किलों में जीवन व्यतीत कर रहा है, मगर समय के चक्र का पहिया घूमते ही उसकी स्थितियां उलट जाते है और वह अपने सत्कर्मों के फल पाते है। ईमानदारी एक अच्छी आदत है, जिसमें जीवन के हरेक पहलू में सदैव सच्चाई और भरोसेमंद होना आवश्यक है। इसमें अनैतिक कार्य शामिल नहीं होते। ईमानदारी एक अच्छा और महत्वपूर्ण गुण है।

ईमानदारी से तात्पर्य है कि जीवन के सभी आयामों में हर किसी के लिए सच्चाई हो और, किसी से झूठ मत बोले तथा कभी भी किसी की बुरी आदतों या व्यवहार में स्वयं को शामिल मत करना। अनुशासन का पालन करना, सभी के साथ अच्छी तरह से व्यवहार करना, किसी भी परिस्थिति में हमेशा सही बोलना, समय पर काम पूरा करना और दूसरों के साथ हमेशा ईमानदार रहना आदि सभी लक्षण ईमानदारी के हैं।

ईमानदारी का अर्थ है - सत्यवादी होना। ईमानदारी का मतलब जीवन भर सच बोलने की आदत को विकसित करना है। जो व्यक्ति अपने जीवन में ईमानदारी का अभ्यास करता है, अनुशासन बनाए रखता है उसके पास मजबूत नैतिक चरित्र होता है। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति ने लिखा है, "ज्ञान की पुस्तक में ईमानदारी पहला अध्याय

है।" यह किसी के जीवन में अभिन्न मूल्यों के निर्माण, आकार और प्रेरित करने की क्षमता के कारक है। ईमानदारी सत्य और सत्य होने की गुणवत्ता को संदर्भित करती है। इसके अलावा प्रेमचंद की "जंगल की कहानियां " पुस्तक में संकलित कहानियों के माध्यम से बालकों को "सच्चाई और ईमानदारी" की नैतिक शिक्षा दी गई है।

परिवार, सभ्य समाज में ईमानदारी हमेशा सराहनीय है। ईमानदारी, किसी भी व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ गुण एवं उसकी सबसे अच्छी आदत है, जिसका हर किसी के जीवन में सर्वाधिक महत्व होता है। ईमानदार व्यक्ति सभी का सम्मान करता है। एक व्यक्ति के लिए ईमानदारी के चरित्र का निर्माण पूरी तरह से उसके पारिवारिक मूल्यों और नैतिकता और उसके आस-पास के वातावरण पर निर्भर करता है। ईमानदारी गुण को व्यावहारिक रूप से भी विकसित किया जा सकता है जिसके लिए उचित मार्गदर्शन, प्रोत्साहन, धैर्य और समर्पण की आवश्यकता होती है, ईमानदारी मनुष्य जीवन में किसी भी बाधाओं का सामना करने और लड़ने की इच्छा शक्ति को मजबूत करने में उत्प्रेरक का कार्य करती है। ईमानदार व्यक्ति को हमेशा परिवार और समाज में सर्वाधिक सम्मान मिलता है और उसकी एक अलग प्रतिष्ठा होती है।

सद्-व्यवहार की जीत

सच बोलना जैसे किसी व्यक्ति की पहचान बन जाती है, उसी प्रकार सद्-व्यवहार भी हमें समाज में अलग नाम और पहचान देता है। हम सदैव अच्छे गुणों को सीखने के लिए अग्रसित रहते हैं और उन गुणों में सद्-व्यवहार को भी जरुर शामिल करना चाहिए। सद्-व्यवहार का अर्थ वह व्यवहार जिसमें उत्तमता का भाव हो। सद्-व्यवहार एक ऐसा विषय है, जो हर मनुष्य को जरुर सीखना चाहिए और इसकी उपयोगिता हर उम्र के लोगों को कही न कही जरुर होती है। एक बच्चे के चरित्र का निर्माण बचपन से ही होने लगता है और सबसे पहली जगह उसका घर होता है, इसके बाद आस-पास के लोग तथा वह स्थान है, जहां वह खेलता है। बच्चे हर जगह से कुछ न कुछ सीखते रहते हैं इसलिए अभिभावकों को यह ध्यान देना आवश्यक है कि बच्चे कुछ गलत न सीखें तथा साथ ही उनमें अच्छी आदतें विकसित हों।

सद्-व्यवहार का महत्व हमारे जीवन में बहुत अधिक होता है। कई बार लोग हमें हमारे नाम से अधिक व्यवहार से जानते हैं। कोई व्यक्ति बहुत ही भले इंसान हो, बहुत दान पुण्य किया हो परंतु यदि उसके व्यवहार में सही लहजा नहीं हुआ तो सब व्यर्थ है। सद्-व्यवहार हमारे व्यक्तित्व को परिभाषित करता है और हमेशा सद्-व्यवहार की ही जीत होती है।

प्रेमचंद के बाल कहानी में सद्-व्यवहार की जीत पर अनेकों रचनाएं मिलती है। प्रेमचंद के कहानी 'कश्मीरी सेब', 'बड़े घर की बेटी' आदि कहानी में सद्-व्यवहार की जीत पर नैतिक शिक्षा दी गई है। उनकी कहानी 'बड़े

घर की बेटी' में लेखक यह नैतिक शिक्षा देते है कि- पारिवारिक शांति और सामंजस्य तथा सद्-व्यवहार बनाए रखना घर की स्त्रियों तथा सभी सदस्यों का अहम् भूमिका होती है। हम अपनी समझदारी से टूटते और बिखरते परिवारों को भी जोड़ सकते है।

एक व्यक्ति को अपने जीवन में अच्छा आचरण, वाणी में मधुरता और जीवन को संयम के साथ जीना आवश्यक है। यह उसका व्यक्तित्व होता है जो अमर है और ये सदाचार के माध्यम से आता है। जीवन में पैसे बहुत लोग कमाते हैं परंतु नाम कम ही कमा पाते है। ऐसे लोगों से हर कोई बात करना चाहता है जिसका व्यवहार उत्तम हो। सद्-व्यवहार जीवन जीने का सही तरीका है और हमें इसका पालन करना चाहिए। सद्-व्यवहार का अर्थ अपने से बड़ों की बात मानना, अपने व्यवहार में मधुरता और दूसरों का नि:स्वार्थ भाव से सेवा करना ही है। सद्-व्यवहार आजीवन एक पूंजी की तरह हमारे साथ रहता है। एक सदाचारी व्यक्ति सदैव जीवन में नाम कमाता है और उसे मरणोपरांत भी याद किया जाता है। सद्-व्यवहार चरित्र-निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। यह जीवन को सुंदर बनाता है साथ ही व्यक्तित्व को भी निखारता है।

एक सदाचारी सदैव सभी प्रकार के बुरे कर्मों जैसे की क्रोध, ईर्ष्या आदि से दूर रहता है और उसका जीवन सदैव सुखमयी होता है। यह कभी हममें ईर्ष्या नहीं आने देता और स्वभाव को बेहद निर्मल एवं शांत बनाता है। सद्-व्यवहार गुण हमारे व्यक्तित्व को निखार देता है और जीवन में अलंकार की तरह काम करता है। हमारे इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं जो इस बात को प्रमाणित करते हैं। गांधीजी ने नैतिकता की शिक्षा दिया था और उन्होंने सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया था। इसके अलावा इतिहास में ऐसे कई नाम दर्ज हैं जो सद्-व्यवहार के अच्छे उदाहरण हैं।

सद्-व्यवहारी, अच्छे आचरण का प्रत्यक्ष उदाहरण होता है। जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाई आ जाए वे कभी पीछे नहीं भागते और डटकर मुसीबतों का सामना करते हैं। सदाचारी व्यक्ति कभी हमें मुसीबत में नहीं डालता, इसलिए बच्चों को सद्-व्यवहार अवश्य सिखना चाहिए और उन्हें सदैव इसका पालन करना चाहिए। यह समाज के कल्याण का हिस्सा है और अपने जीवन का उद्देश्य केवल धन कमाना मात्र न रहकर जन हित में लगाना चाहिए।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। समाज में रहकर वह काम करता है, परन्तु समाज में ऐसे कुछ नियम हैं जिसे हम सद्-व्यवहार कहलाते हैं। जैसे गुरुजनों का आदर करना, सत्य बोलना, सेवा करना, किसी को कष्ट न पहुंचाना, मधुर वचन बोलना, विनम्र रहना, बड़ों का आदर करना आदि सद्-व्यवहार के उदाहरण हैं। ये उत्तम चरित्र के गुण हैं। जिस व्यक्ति के व्यवहार में ये गुण होते हैं, वह सदाचारी कहलाता हैं। सद्-व्यवहार के बल पर असीम शक्ति को प्रकट करनेवाला सामर्थ्यवान मनुष्य संत और महापुरुष के रूप में जाने जाते है, वह अपने

महान कार्यों से महापुरुष कहलाता है। ऐसे ही महापुरुष हमारे जीवन के आदर्श होते हैं। उनका सद्-व्यवहार अनुकरणीय होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

1.मानसरोवर (समग्र), हिंदी कोश सं प्रेमचंद मुंशी

2.प्रेमचंद रचनावली (20 खंड), जनवाणी प्रकाशन, सं प्रेमचंद मुंशी संस्करण 1996

3.प्रेमचंद घर में, सरस्वती प्रेस, बनारस, प्रेमचंद शिवरानी देवी

4.प्रेमचंद: बाल-साहित्य समग्र (मूल हिन्दी), डॉ. गोयनका कमल किशोर मेधा बुक्स, दिल्ली, संस्करण-2016

5.बाल-साहित्य:मेरा चिंतन (मूल हिन्दी), मेधा बुक्स, डॉ. देवसरे हरिकृष्ण दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2002

6. जंगल की कहानियां (मूल हिन्दी), बनारस सरस्वती प्रेस, सं प्रेमचंद मुंशी बनारस संस्करण-1936

7.कुत्ते की कहानी (मूल हिन्दी), सौजन्य-सन्दर्भ प्रकाशन सं प्रेमचंद मुंशी दिल्ली-32 से प्रकाशित, संस्करण-1936

8.कलम, तलवार और त्याग (दो भाग), सं प्रेमचंद मुंशी

प्रथम भाग-सरस्वती प्रेस बनारस,संस्करण-1939

द्वितीय भाग-सरस्वती प्रेस,इलाहाबाद,संस्करण-1944

9.रामचर्चा, सरस्वती प्रेस, बनारस,संस्करण-1938 सं प्रेमचंद मुंशी

10.महात्मा शेख़सादी, हिन्दी पुस्तक एजेंसी सं प्रेमचंद मुंशी

126 हैरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण-1917

11.दुर्गादास, भारतीय ज्ञानपीठ, तृतीय संस्करण-2020 सं प्रेमचंद मुंशी

12.प्रेमचंद से दोस्ती ईमानदारी और सच्चाई, सं राय विकास नारायण साहित्य उपक्रम, पंचम संस्करण-2010

****